**समाज मनोविज्ञान का अर्थ तथा परिभाषाएं**

**(Meaning and definitions of Social Psychology)**

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अपनी विविध आवश्यकताओं के लिए मनुष्य दूसरे व्यक्तियों से, समूहों से, समुदायों से अन्तःक्रियात्मक सम्बन्ध स्थापित करता है। व्यक्ति के व्यवहार एवं समाज में गहरा सम्बन्ध होता है। सदस्यों के बीच आपसी सम्बन्ध उनके परस्पर व्यवहार पर निर्भर करते हैं। मनुष्य के विचारों, व्यवहारों एवं क्रियाओं का प्रभाव एक दूसरे पर पड़ता है। व्यक्ति का व्यवहार सर्वदा एक समान नही होता है। एक ही व्यक्ति कई रूपों में व्यवहार करता हुआ पाया जाता है। उसके विचार, भाव तथा व्यवहार विविध परिस्थितियों में प्रभावित भी होते रहते हैं। स्पष्ट है कि मानव व्यवहार के विविध पक्ष होते हैं। मनुष्य दूसरों के बारे में अलग-अलग तरह से सोचता तथा प्रभावित होता है।

सामाजिक मनोविज्ञान में हम जीवन के सामाजिक पक्षों से सम्बन्धित अनेकानेक प्रश्नों के उत्तरों को खोजने का प्रयास करते हैं। इसीलिए सामाजिक मनोविज्ञान को परिभाषित करना सामान्य कार्य नही है।

**राबर्ट ए. बैरन तथा जॉन बायर्न (2004)** ने ठीक ही लिखा है कि, ‘सामाजिक मनोविज्ञान में यह कठिनाई दो कारणों से बढ़ जाती है : विषय क्षेत्र की व्यापकता एवं इसमें तेजी से बदलाव।’ सामाजिक मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए उन्होंने लिखा है कि, ‘‘सामाजिक मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार और विचार के स्वरूप व कारणों का अध्ययन करता है।’’

ऐसा ही कुछ **किम्बॉल यंग (1962)** का भी मानना है। उन्होनें सामाजिक मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए लिखा है कि, ‘‘सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्तियों की पारस्परिक अन्तक्रियाओं का अध्ययन करता है, और इस सन्दर्भ में कि इन अन्तःक्रियाओं का व्यक्ति विशेष के विचारों, भावनाओं संवेगो और आदतों पर क्या प्रभाव पड़ता है।’’

**शेरिफ और शेरिफ (1969)** के अनुसार, ‘‘सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक उत्तेजना-परिस्थिति के सन्दर्भ में व्यक्ति के अनुभव तथा व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन है।’’

**मैकडूगल** ने सामाजिक मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए लिखा है कि, ‘‘सामाजिक मनोविज्ञान वह विज्ञान है, जो समूहों के मानसिक जीवन का और व्यक्ति के विकास तथा क्रियाओं पर समूह के प्रभावों का वर्णन करता और उसका विवरण प्रस्तुत करता है।’’

**विलियम मैकडूगल, (1919) ओटो क्लाइनबर्ग (1957)** का कहना है कि, ‘‘सामाजिक मनोविज्ञान को दूसरे व्यक्तियों द्वारा प्रभावित व्यक्ति की क्रियाओं को वैज्ञानिक अध्ययन कहकर परिभाषित किया जा सकता है।’’

उपरोक्त परिभाषाओं को देखते हुए हम स्पष्टतः कह सकते हैं कि सामाजिक मनोवैज्ञानिक यह जानने का प्रयास करते हैं कि व्यक्ति एक दूसरे के बारे में कैसे सोचते हैं तथा कैसे एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

लेकिन, **रेबर एवं रेबर** ( Reber & Reber, 2001 ) के द्वारा दी गयी परिभाषा न केवल अधिक आधुनिक है, बल्कि अधिक समग्र, सफल तथा संतोषजनक भी। उनके अनुसार, "समाज मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है, जिसमें मानव व्यवहार के उन सभी पक्षों का अध्ययन किया जाता है, जो व्यक्ति के, दूसरे व्यक्तियों, समूहों, सामाजिक संस्थाओं तथा सम्पूर्ण समाज के प्रति सम्बन्धों में निहित होते हैं।''

यह परिभाषा समाज मनोविज्ञान के स्वरूप तथा इसके क्षेत्र को स्पष्ट करने में अधिक सफल है। अतः यह परिभाषा अन्य परिभाषाओं की तुलना में अधिक समग्र (comprehensive ) तथा संतोषप्रद (satisfactory) है।

समाज मनोविज्ञान के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं:

(i) समाज मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक मुख्य शाखा है। एक ओर समाज मनोविज्ञान शुद्ध मनोविज्ञान (Pure Psychology) की शाखा है और दूसरी ओर यह व्यावहारिक मनोविज्ञान (Applied Psychology) की शाखा है। कारण, यह मनोविज्ञान वास्तव में शुद्ध मनोविज्ञान तथा व्यावहारिक मनोविज्ञान दोनों की शर्तों को पूरा करता है।

(ii) समाज मनोविज्ञान की विषय-वस्तु (subject matter ) व्यक्ति का वह व्यवहार है, जो सामाजिक परिस्थितियों में होता है। सामाजिक परिस्थितियाँ चार प्रकार की होती हैं—(क) व्यक्ति तथा व्यक्ति के बीच, (ख) व्यक्ति तथा समूह के बीच,

(ग) व्यक्ति तथा सामाजिक संस्था के बीच तथा (घ) व्यक्ति तथा सम्पूर्ण समाज के बीच इन चारों परिस्थितियों में होनेवाले व्यवहारों का अध्ययन समाज मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत किया जाता है। सियर्स, पिप्लेस और टेलर (Sears et al. 1991) ने भी कहा है कि, "समाज मनोविज्ञान सामाजिक व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन है।"

(iii) इस परिभाषा से स्पष्ट है कि समाज मनोविज्ञान का क्षेत्र काफी व्यापक है। व्यक्ति चाहे दूसरे व्यक्ति के प्रति व्यवहार करता हो, प्राथमिक समूह (primary group) के प्रति व्यवहार करता हो, द्वितीयक समूह (secondary group ) के प्रति व्यवहार करता हो, चाहे सम्पूर्ण समाज के प्रति व्यवहार करता हो, उन सभी व्यवहारों का सम्बन्ध समाज मनोविज्ञान से है। व्यक्ति का शायद ही कोई व्यवहार ऐसा होता हो जो सामाजिक परिस्थिति ( वास्तविक या काल्पनिक) से बाहर होता है। इसीलिए कहा जाता है कि सभी मनोविज्ञान सामाजिक मनोविज्ञान है।

(iv) समाज मनोविज्ञान में जिन सामाजिक व्यवहारों अथवा सामाजिक पारस्परिक क्रियाओं (social interactions) का अध्ययन किया जाता है वे संगठित ( organized) तथा उद्देश्य निर्देशित (goal diredcted) होती है। पारस्परिक क्रिया या सामाजिक व्यवहार वास्तव में व्यक्ति के संवेगों (emotions ), विचारों, स्मृतियों (memories), संज्ञानों (cognitions), आदि का संगठित परिणाम है। यह संगठित व्यवहार वास्तव में उद्देश्यपूर्ण होता है। किसी भिखमंगे को भीख देना अथवा मुल्ला या पंडित का सम्मान करना भी उद्देश्यपूर्ण व्यवहार है।

(v) समाज मनोविज्ञान का मौलिक सम्बन्ध व्यक्ति से है, उस व्यक्ति से जो समाज में रहता है। यहाँ सामाजिक मानव (social man) का अध्ययन किया जाता है और ऐसे संप्रत्ययों (concepts) पर बल दिया जाता है जो वैयक्तिक व्यवहार (individual behaviour) के अध्ययन से प्राप्त होते हैं।